**SHORT SUMMARY OF THE WORK DONE ON THE UGC MINOR RESEARCH PROJECT**

| | | |
|---|---|---|
| **Title of the Research Project** | **:** | **Shailesh Matiyani Ki Kahaniyo Ka Bhashai Bhoogol** |
| **Name and Address of Principal Investigator** | **:** | **Dr. Pratibha Joshi**<br>**Assistant Professor (Hindi),**<br>**Department of Foundation Courses**<br>**Christian Eminent Academy of Management, Professional Education & Research,**<br>**F-Sector, HIG, R.S.S. Nagar Main Road, Indore** |
| **UGC approval Letter No. and Date** | **:** | **MH-2/103039/XII/13-14/CRO Dated 2014** |

## Summary of the Findings

शैलेश मटियानी समकालीन कहानी के सशक्त हस्ताक्षर है। बीसवीं शती के उत्तरार्द्ध की कहानियाँ (1950 के बाद) वस्तुपरक अनुभव से गुंथी हुई। इनमें मध्यम एवं निम्न वर्ग के पीड़ित शोषित, उपेक्षित एवं अभावग्रस्त व्यक्ति की समस्याओं को गहराई के साथ उभारा गया है। इस वर्ग की कुंठा, निराशा, अकुलाहट को शैलेश ने अपनी कहानियों का विषय बनाया। शैलेश मटियानी अपनी कहानियों के पात्र के रूप में स्वयं दिखाई देते है। शैलेश मटियानी के कथा साहित्य से जब मेरा साक्षात्कार हुआ तो जमीन जुड़ा जीवंत यथार्थ का दस्तावेज प्रस्तुत करता मटियानी का कथाकार मुझे झकझोर गया। मटियानी जी के कथा साहित्य को पढ़कर मुझे लगा कि भूख, पीड़ा करूणा एवं मानवीय संवेदना की भावभूमि पर लिखी गई कहानियाँ अभी तक चर्चित क्यों नहीं हुई? इन्हे पाठ्यक्रम में स्थान क्यों नही मिला।

चूँकि शैलेश मटियानी ज्यादा पढ़े-लिख नहीं थे लेकिन उनकी कहानियों में भाषा पहाड़ो से फिसलते पत्थरों की खनक से निर्मित होती है। उनकी कहानियों पर कालचक्र का प्रभाव दिखाई देता है। जिस परिवेश में वे रहे और अपना जीवन व्यतीत किया, वही सब उनकी कहानियों की भाषा के रूप में उभरा है। उन्होंने अपने जीवन के कुछ वर्ष अल्मोड़ा जनपद में व्यतीत किए। कुछ वर्ष मुंबई और इलाहाबाद में भी बिताए। मटियानी ने भाषा को कई स्तर पर इजाद करने की कोशिश की है। भाषा अभिव्यक्ति और रचनात्मकता को वहन करने वाला वह रथ है जिसे रचनात्मकता, तेज और अनुभव की अग्नि की संपूर्ण वर्षा को अपने ऊपर झेलना पड़ता है। शैलेश ने अपनी कहानियों में निम्न से निम्नतर लोगों की भाषा ज्यों की त्यों प्रस्तुत की है । मटियानी की कहानियों में कुमायूँ अंचल अपने पूरे वैभव के साथ उपस्थित है। पहाड़ी जीवन के शब्दों का प्रयोग ग्रामीणों के कड़े सघर्ष का बोध कराते हैं।

शैलेश जी ने प्रकृति के खुले प्रांगण के वर्णनों में अवाचिक भाषा का प्रयोग कहानियों में किया है। शैलेश जी के अंतर की भाषा कलकल निनादिनी की तरह वाचिकता को निशस्त्र करती हुई एक सक्षम परिवेश रचती है। यही मटियानी का भाषाई भूगोल है, जिस पर अत्यधिक शोध की आवश्यकता थी। यही वजय थी कि मैंने इसे अपने शोध का विषय बनाया।

प्रस्तुत शोध ग्रंथ में प्रथम अध्याय में शैलेश मटियानी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया है, इसी अध्याय के द्वितीय भाग में शैलेश जी की कहानियों पर संक्षिप्त रूप से प्रकाश डाला गया है।

**द्वितीय अध्याय** में शैलेश मटियानी की कहानियों में आंचलिक भाषा या ग्रामीण परिवेश की भाषा की कहानियों में भाषा के रूप विभिन्न सामने लाने का प्रयास किया है। शैलेश जी की कहानियों में उन्होंने अपने शहर में बिताये दिनों में लिखी गई कहानियों में बम्बाइया (महानगरीय) शहरी भाषा का बखुबी प्रयोग किया है।

**तृतीय अध्याय** में भी शैलेश जी की कहानियों में मध्यम वर्गीय, निम्नवर्गीय, दलित वर्गीय, स्त्री की भाषा तथा अपसंस्कृत भाषा के प्रयोग से संवाद व उदाहरण लिए गए है।

**चतुर्थ अध्याय** में शैलेश जी की कहानियों में प्रकृति विज्ञान के साथ भाषा के विभिन्न रूपो की कुछ झलकियाँ प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

शैलेश मटियानी ने अपनी कहानियों में शब्द-समूह, वाक्य संरचना, लोकोक्तियाँ मुहावरों के मुहावरों से भाषा के खनकते रूप को कहानियों में प्रस्तुत किया है ।यही रूप इस शोध कार्य के माध्यम से आगे लाने का प्रयास किया है। अंतिम अध्याय में संपूर्ण शोध कार्य का अत्यंत संक्षिप्त रूप प्रस्तुत करते हुए शैलेश जी के हिन्दी साहित्य में योगदान को दर्शाया गया है।